



शोधायन

(मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य की अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित शोध पत्रिका)

वर्ष : 10
अंक : 34
अप्रैल - जून 2021

GREGN. No. 10986/2012-CO/C
ISSN 2249 - 7536 Shodhayan
MPHIN 32060/2015
Refd. & UGC apprvd.
Peer Reviewed Research Journal

International Overview

Vol. 34, Year - 10, April - June 2021



(An International Quarterly Multi-disciplinary UGC approved Research Journal)

शोधायन

मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य की
अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सन्दर्भित शोध पत्रिका
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं विशेषज्ञ समिति
से अधिमान्य शोध पत्रिका



(शिक्षा, साहित्य, कला एवं संगीत पीठ, ग्वालियर)
रजि. क्र. : 02/42/01/14126/10, दि. 15-11-2010

पंजीकृत कार्यालय -

एच. आई. जी. 1305, न्यू दर्पण कॉलोनी
ठाटीपुर, मुरार, ग्वालियर - 474011

संपादकीय कार्यालय पत्र व्यवहार का पता -

सावंत निवास, बक्षी की गोठ

जनकगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001

भ्रमणध्वनि - 9826409252, 9755447899

दूरध्वनि - 0751-2629694

Email : shodhayan01@gmail.com

प्रकाशन मास जुलाई 2021

वर्ष : 10 अंक : 34 अप्रैल - जून 2021
वार्षिक सदस्यता : 1000/- सहयोग राशि
छः वार्षिक सदस्यता : 2000/- सहयोग राशि
आजीवन सदस्यता : 3000/- सहयोग राशि

संदीप गुप्ता, सचिव के लिए प्रयास - शिक्षा, साहित्य, कला एवं संगीत पीठ,
ग्वालियर द्वारा प्रकाशित एवं इम्पेक्ट क्रियेटिव सर्विसेज, ग्वालियर से मुद्रित।

(शोध-पत्रिका में प्रकाशित आलेख लेखकों/शोधार्थियों के हैं,
जिन्हें प्रकाशन से पूर्व विशेषज्ञ समिति द्वारा परीक्षण किया जाता है)

हमारे पथ प्रदर्शक

स्व. डॉ. रामकृष्ण गुप्त

• • • ——— • • •

प्रधान संपादक

डॉ. शैलेन्द्र मोहिते

• • • ——— • • •

उप-संपादक

डॉ. कृष्णा गुप्ता

डॉ. विजय पाण्डेय

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

• • • ——— • • •

सहयोगी संपादक

डॉ. पी.के. बंसल

डॉ. उर्मिला सिंह तोमर

डॉ. आदित्य डालमिया

• • • ——— • • •

**ब्यूरो कार्यालय
प्रबन्ध एवं सम्पर्क**

संदीप गुप्ता

सचिव, प्रयास -

शिक्षा साहित्य कला एवं संगीत पीठ

श्रीमती अलका छारी

सदस्य

आलोक शर्मा

सदस्य

• • • ——— • • •

मुद्रक

इम्पेक्ट क्रियेटिव सर्विसेस

ग्वालियर फोन : 0751-2424427

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय विवरण	लेखक	पृष्ठ संख्या
हिन्दी साहित्य -			
1.	आखिर क्या है वृद्ध पूँजीवाद का सांस्कृतिक तर्क ?	डॉ. सोफिया राजन	01 - 04
2.	अद्यतन अभिनव : आचार्य अभिनवगुप्त	डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	05 - 12
3.	संस्कृति, संस्कार और संस्कृत	डॉ. प्रणव शर्मा	13 - 14
4.	मालती जोशी की कहानियों में अभिव्यक्त नारी जीवन	डॉ. मायावती रामशरण वैसवारा	15 - 17
5.	मनोहर श्याम जोशी और हिन्दी उपन्यास	डॉ. मनुप्रताप	18 - 21
6.	कुँवर नारायण के काव्य में यथार्थ परक दृष्टि	डॉ. यशपाल सिंह	22 - 23
वाणिज्य व अर्थशास्त्र -			
7.	Green Marketing of Automobiles a Step towards Clean Environment: An Empirical Study of Consumer Awareness	Dr Rupali Saini	24 - 32
8.	A study on Demographic Factors Affecting Work Performance of Women police With Special Reference to Madhya Pradesh	Dr. P.K. Bansal Dr. Jyoti Rajouriya	33 - 43
9.	Social Marketing: Marketing For "Social Good"	Dr Mayank Agarwal	44 - 52
10.	महिलाओं पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव	मुकेश सागर	53 - 55
कला व संगीत -			
11.	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में "आकाशवाणी" की भूमिका	डॉ. पी.एल. गोहदकर	56 - 58
12.	ग्वालियर घराने की ख्याल गायन शैली की विशेषताएँ	डॉ. साधना देशमुख मोहिते डॉ. पी.एल. गोहदकर	59 - 62
13.	ऐतिहासिक संदर्भ में भारतीय-संगीत	डॉ. स्वप्ना मराठे	63 - 68

अद्यतन अभिनव : आचार्य अभिनवगुप्त

*डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

‘मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः’

अर्थात् मनुष्य के लिए मन ही उसके बन्धन और मोक्ष का कारण है यह भारतीय चिंतक मनीषी स्वीकार करते हैं तथा यह भी कि—

‘चित्तनदी उभयतोवाहिनी वहति च पापाय, वहति च पुण्याय’

अर्थात् चित्त वृत्ति नदी की तरह कभी अधोगामिनी होकर पाप का कारण और सांसारिक माया-मोह, भोग-विलास में जकड़ने वाली बन जाती है तो कभी ऊर्ध्वगामिनी होकर पुण्य की वाहक तथा मोक्ष प्रदान करने वाली हो जाती है। यहाँ ‘मोक्ष’ से तात्पर्य मृत्यु के पश्चात् आत्मा का परमात्मा में विलीन हो जाना नहीं है बल्कि जीवित रहते अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रख, संयमपूर्वक ‘त्येन त्यक्तेन भुंजिथाः’ का पालन करते हुए, सद्गृहस्थ सन्यासी की तरह जीवन यापन करना यानि बुद्ध द्वारा बताए गए मध्यम मार्ग का अनुशरण करना है। संसार में रहकर भोग-विलास, माया-मोह से मुक्ति ही निर्विकार सामाजिक का ‘मोक्ष’ है। यह अवस्था परम आनंद की अवस्था है। चित्तवृत्ति को ऊर्ध्वमुखी बनाने के लिए उसका पूर्व जन्म के संस्कारों के साथ ही सुशिक्षित, संस्कारित, परिष्कृत होना आवश्यक है और यह कार्य साहित्य—काव्य-नाटक के द्वारा सहजता से किया जा सकता है।

आचार्य अभिनवगुप्त ऐसा मानते हैं, जो स्वयं काव्यशास्त्री होने के साथ दार्शनिक भी हैं किन्तु

“कुछ दार्शनिक, तत्त्वज्ञ विद्वान यह मानने को तत्पर हैं कि काव्य जीवन के तीन पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ और काम के बारे में उपादेय हो सकता है, पर जीवन के परम मूल्य ‘मोक्ष’ के विषय में न केवल काव्य उपादेय नहीं है, वरन् हानिकर भी है। उनका अभिमत है कि कविता उन वासनाओं का उद्दीपन करती है जिनका शमन ‘मोक्ष’ के लिए अनिवार्य है।” 13वीं शती के आचार्य श्रीधर ने काव्य पर लगाए गए इस आरोप का उल्लेख अपने ग्रंथ ‘काव्य-प्रकाश-विवेक’ में किया तथा तत्त्वज्ञों का नाम न देते हुए आचार्य अभिनवगुप्त के साहित्य गुरु-भट्टतौत के चार श्लोकों को उद्धृत किया जो इस आरोप का खण्डन करते हुए कहते हैं कि— नाटक और कविता के अनुशीलन से भावक के मन की भाव शुद्धि हो जाती है। ‘मोक्ष’ परम एवं व्यापक अनुभव है इसे तत्सदृश रसानुभव के बिना नहीं पाया जा सकता।¹

आचार्य क्षेमेन्द्र के गुरु आचार्य अभिनवगुप्त ने ‘नाट्यशास्त्र’ की टीका ‘अभिनव भारती’ में यह स्वीकार किया है कि उन्होंने नाट्यशास्त्र की जो व्याख्या की है वह गुरु भट्टतौत के मूल मतों का विस्तार पूर्वक प्रतिपादन है। अर्थात् मोक्षप्राप्ति के विषय में वे अपने गुरु से सहमत हैं। अभिनवगुप्त रस-ध्वनि वादी हैं तथा उनकी रस-प्रक्रिया ‘शैवाद्वैत-दर्शन’ तथा ‘प्रत्यभिज्ञा-सिद्धान्त’ का व्यावहारिक रूप है। इसलिए रस को वे ‘आनन्द स्वरूप’ मानते हैं। शैवाद्वैत दर्शन में आनन्दवाद

*श्रीसूर्यम्, कुलपति निवास के पास, कोर्ट रोड 10 सिविल लाइन, सागर - 470001 (म.प्र.), मोबा.: 9753207910